thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853115
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15 विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 11 अंक : 35 रोहतक, 14 फरवरी, 2015 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में

सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

रोहतक 8.2.2015। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में आज प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का शुभारम्भ यज्ञ से किया गया। दयानन्द मठ यज्ञशाला में यज्ञ किया गया जिसके ब्रह्मा श्री सत्यवीर शास्त्री, संयोजक आचार्य यशपाल आर्य तथा बहन सुमित्रा, बहन दया आर्या व श्री सुशील आर्य जो यज्ञ के यजमान भी रहे, ने अपने ईश्वरभक्ति के भजनों से यज्ञ पर बैठे सभी आर्यों को मोहित किया।

प्रथम पाखण्ड-खण्डन सम्मेलन की अध्यक्षता सभाप्रधान आचार्य विजयपाल जी, मुख्य अतिथि डॉ० सुरेन्द्र कुमार कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, मुख्य वक्ता डॉ० धर्मवीर कार्यकारी अध्यक्ष परोपकारिणी सभा अजमेर, आचार्य सोमदेव अजमेर, श्री धर्मपाल आर्य, प्रो० ओमकुमार आर्य, संयोजक श्री धर्मदेव विद्यार्थी तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० रामनिवास आर्य रहे।

दूसरे राष्ट्ररक्षा व राष्ट्रभाषा सम्मेलन के अध्यक्ष आचार्य बलदेव जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली, मुख्य अतिथि श्री रामबिलास शर्मा, शिक्षामन्त्री हरियाणा सरकार, मुख्य वक्ता श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल उपप्रधान सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली, श्री प्रकाश आर्य मन्त्री सार्वदेशिक सभा, डॉ० राजेन्द्र विद्यालंकार, श्री विनय आर्य व आचार्य सनत कुमार रहे तथा संयोजक मा० रामपाल आर्य सभामन्त्री एवं भजनोपदेशिका बहन अंजलि रहीं। इस सम्मेलन के आकर्षण रहे एम.डी.एच. के मालिक महाशय धर्मपाल जिन्होंने आज वेदप्रचार रथ को आर्यजनता को समर्पित किया।

तीसरे गोरक्षा सम्मेलन के अध्यक्ष आचार्य योगेन्द्र आर्य, मुख्य अतिथि श्री ओमप्रकाश धनखड़ कृषि, पशुपालन एवं डेयरी विकास मंत्री, मुख्यवक्ता आचार्य देवव्रत प्राचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र, श्री आजाद सिंह आर्य सभा पुस्तकाध्यक्ष, श्री कन्हैयालाल आर्य सभा कोषाध्यक्ष, श्री कुलवीर खर्ब, भजनोपदेशक रोकी मित्तल तथा संयोजक आचार्य सर्वमित्र आर्य रहे।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में उमड़ी भीड़ देखने को बनती रही। इस सम्मेलन की विशेषता यह रही कि पंडाल केसरिया रंग से रंगा हुआ था। प्रत्येक आर्य नर-नारी केसरिया रंग से रंगे हुए भारी उत्साह से सम्मेलन में शामिल हुए। पहली बार आर्यों के सम्मेलन में इतनी भारी संख्या में युवक तथा युवतियों ने भाग लिया।

इस सम्मेलन में प्रत्येक मुख्य अतिथि या विशिष्ट अतिथि को गुरुकुल का बैण्ड मंच तक बैंड बजाते हुए ले जा रहा था। जब उसकी धुन लोगों को सुनती थी तो एक निराला उत्साह पंडाल में बैठे आर्यजन में भर जाता था। आधुनिक उपकरणों द्वारा 24 लाख रुपये की लागत से बना वेदप्रचार रथ सभा की शोभा बढ़ा रहा था।

आचार्य बलदेव जी ने आज इस सम्मेलन के माध्यम से सन्देश दिया कि ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज का गठन वेदों के प्रचार और प्रसार के लिए किया था। आओ आर्यो! पुनः **'वेदों की ओर लौटो'** अभियान तन-मन-धन से सहयोग करें ताकि ऋषि का स्वप्न साकार हो सके।

कार्यक्रम की झलकियाँ पृष्ठ 4-5 पर.....

thearyasamaj.org

ऋषि-बोधोत्सव

❑ भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य

गतांक से आगे....

ऐसी स्थिति में जब हम महर्षि के योगदान की बात करते हैं, तो तुलनात्मक विवेचन से यह बात सामने आती है कि महर्षि का अपूर्व योगदान यही है कि महर्षि ने वेद की मान्यताओं को एक सुसंगत रूप दिया और यही महर्षि का तत्त्वबोध है। जिसका आर्यसमाज अनुयायी बनकर उल्लास पूर्वक इस ऋषि बोधोत्सव को आयोजित करता है। यह तत्त्वबोध जहाँ शास्त्रों के प्रमाणों से परिपुष्ट है, वहाँ उसमें तर्क का संगतिकरण ही महर्षि दयानन्द के तत्त्वबोध का सुसंगतपन है। जैसे कि—

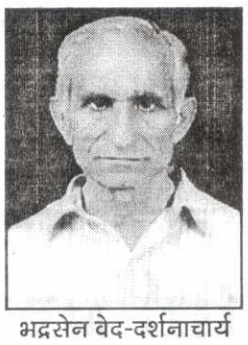

भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य

सुसंगतपन

(1) जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आज एक दौड़-सी लगी हुई है। हर एक सफल होने के लिए जल्दी से जल्दी सबसे पहले मंजिल पर पहुँचना चाहता है। लक्ष्य को साधने और सफलता, प्रगति के लिए जहां रास्ता स्पष्ट, सुनिश्चित होना चाहिए, वहां यदि मार्ग सरल, सीधा हो, तो सफलता, प्रगति सरलता से मिल जाती है, क्योंकि प्रगति में गति शब्द जुड़ा हुआ है। अच्छी गति के लिए रास्ते का सरल, स्पष्ट, सक्षम, सुरक्षित होना बहुत जरूरी है। अधिकतर दो तरह के ही रास्ते हैं, जिनको संगत और असंगत के नाम से स्मरण किया जा सकता है। जैसे कि पुराने और नए नगरों की गलियों, सड़कों की स्थिति है। परिवहन के पथों की तरह जीवन के भी सुसंगत और असंगत रूप में दो प्रकार के पथ प्राप्त होते हैं।

(2) महर्षि दयानन्द के तत्त्वबोध की दूसरी खूबी यह भी है कि यह प्रकाश की तरह स्पष्ट, सुनिश्चित और सन्देह-भ्रम-भय रहित है। जैसे कि प्रकाश में वस्तु और स्थल के स्पष्ट होने से कार्य करना सरल होता है और अन्धकार में कार्य करना जहाँ कठिन, वहाँ ठोकर, भय, भ्रम, संशय बना रहता है। इसी दृष्टि से ही अन्याय, अत्याचार के लिए अन्धेर शब्द का प्रयोग होता है। प्रकाश के समान ही महर्षि का तत्त्वबोध जीवन के हर व्यवहार का एक स्पष्ट, सुनिश्चित, भ्रम-भय-संशयरहित रूप दर्शाता है। तब उसको अपनाने से कार्य की सिद्धि सरल हो जाती है। इसके साथ सिद्धि न होने पर होने वाली असफलता, ठोकर और धोखे का डर भी नहीं रहता है।

उदाहरण-ऋषिबोध कितना सुसंगत और प्रकाश सदृश है, इसकी पहचान के लिए पहला स्पष्ट-सा नमूना है—विवाह-विषयक ऋषि दयानन्द का वर्णन। इसके सम्बन्ध में सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में महर्षि ने विस्तार पूर्वक विवेचन किया है। इसके लिए जहां वेदादि शास्त्रों के प्रमाण दिए हैं, वहाँ युक्ति एवं तर्क से भी विचार किया है। उदाहरण के लिए यह एक ही उदाहरण आयु की दृष्टि से पर्याप्त होगा।

"आठ, नौ और दसवें वर्षपर्यन्त विवाह करना निष्फल है, क्योंकि सोलहवें वर्ष के पश्चात् चौबीसवें पर्यन्त विवाह करने से पुरुष का वीर्य परिपक्व, शरीर बलिष्ठ, स्त्री का गर्भाशय पूरा और शरीर भी बलयुक्त होने से सन्तान उत्तम होती है।"(4,76)

महर्षि स्वामी दयानन्द के विचारों की सुसंगति को पहचानने का दूसरा उदाहरण पारस्परिक अभिवादन का लिया जा सकता है। जब एक व्यक्ति दूसरे से मिलता है, तो आपस में मिलने पर स्वाभाविक रूप से आदर की भावना उभरती है। जिससे परस्पर प्रसन्नता, सम्मान और अपनापन आता है। अत एव सभी देशों, वर्गों, धर्मों में आपस के अभिवादन के लिए कोई न कोई शब्द और शारीरिक चेष्टा आदि के अनेक रूप प्रचलित हैं। एतदर्थ महर्षि दयानन्द का विचार है—"बड़ों को मान्य दे उसके सामने उठकर जा के उच्चासन पर बैठावे प्रथम नमस्ते कहे।" (स०प्र० 2,36) "दिन-रात में जब-जब प्रथम मिलें वा पृथक् हों तब-तब पीतिपूर्वक 'नमस्ते' एक-दूसरे से करें।" (स०प्र० 4,89) अभिवादन के लिए 'नमस्ते' शब्द का प्रयोग अवसर के अनुरूप तर्कसंगत, शास्त्रसम्मत और आधारभूत मूलभावना से हर तरह से मेल खाता है।

ऋषिबोध के सुसंगतपन की तीसरी कसौटी है—सामूहिक नाम—

आर्य— व्यवहार में सुविधा की दृष्टि से प्रत्येक का अपना-अपना नाम होता है। प्रत्येक का जहां अपना-अपना वैयक्तिक नाम होता है, वहां सामूहिक दृष्टि से भी प्रत्येक समूह का एक नाम होता है। जिस-जिस दृष्टि से सामूहिक संगठन होता है, उसी-उसी दृष्टि से भी प्रत्येक समूह का नाम प्राप्त होता है, जैसे कि धर्म, देश, राजनीति, कारोबार (यूनियन के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, फौजी, दुकानदार आदि) की दृष्टि से नाम प्रचलित हैं। इन सीमित समूहों की तरह इन सभी समूहों का एक सांझा सामूहिक नाम होना चाहिए। अत: महर्षि दयानन्द का सिद्धान्त है कि हमारा ऐसा सामूहिक नाम आर्य है, क्योंकि हमारा जितना भी मान्य साहित्य है, उसमें सर्वत्र इस दृष्टि से आर्य शब्द का प्रयोग किया गया है। यह प्रयोग इतना अधिक प्रभाव पूर्ण, सार्वभौतिक, सार्वकालिक तथा सार्वजनिक है कि किसी देश का नागरिक जहां कहीं, जब कभी इसका प्रयोग करना चाहे वह कर सकता है। प्रयोग करने वाले के जीवन की प्रत्येक प्रगति, आकांक्षा और भावना को आर्य शब्द पूरी तरह से अभिव्यक्त करता है, क्योंकि आर्य शब्द का सीधा-सा अर्थ है—अच्छा, श्रेष्ठ, भला। अत: नमस्ते की तरह आर्य शब्द से भी स्पष्ट होता है कि महर्षि के मन्तव्य-शास्त्रसम्मत तथा तर्कसंगत हैं।

इन सामान्य बातों की तरह जब हम जीवन के मूलभूत तत्त्वबोध के सम्बन्ध में विचार करते हैं तो पता चलता है कि महर्षि दयानन्द ने जीवन के सर्वांगीण विकास और निखार के लिए भी एक सुसंगत तत्त्वबोध दिया है। जो कि 'एकेश्वरवाद, मनुष्य जाति की एकरूपता, धर्म=अच्छे आचरण का नाम है और सभी महापुरुषों का सम्मान' के रूप में है। आइए! इन पर भी कुछ संक्षिप्त विचार करें।

(1) एकेश्वरवाद का अर्थ है, एक ईश्वर की मान्यता। हमारे चारों ओर पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, सूर्य आदि अनेक प्राकृतिक पदार्थ हैं, जो कि हम जैसे किसी मनुष्य ने नहीं बनाये। इन प्राकृतिक पदार्थों की रचना, व्यवस्था किसी के करने से ही होती है। इनकी व्यवस्था बताती है कि इसका कोई न कोई कर्त्ता धर्ता और नियामक अवश्य है और वही ईश्वर है। ईश्वर के द्वारा होने वाले प्राकृतिक कार्य सभी स्थानों पर एक रूप में ही अपना-अपना कार्य कर रहे हैं। तभी तो सभी स्थानों पर अन्न, फूल, फल, खनिज, धातुएं एक रूप में ही मिलती हैं। यह एकरूपता एवं समान व्यवस्था अपने उत्पादक, व्यवस्थापक की एकता को ही सिद्ध करती हैं।

इसी प्रकार सभी प्राणियों की अपनी-अपनी शरीर रचना, अंगसंस्थान और उनका कार्य एक-सा ही है। प्रदेश में सामान्य-सा ही भेद तथा प्रभाव होता है। यह एकरूपता, समानता भी अपने कर्त्ता की एकता को ही सिद्ध करती है। शास्त्रों में जगत् के कर्ता-धर्ता-संहर्ता का एक रूप में ही विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। हाँ, वहाँ प्रकरण के अनुरूप उसके गुण, कर्म, स्वभाव को बताने के लिए भिन्न-भिन्न नामों का संकेत प्राप्त होता है, पर उन नामों का नामी एक ही है। इसके विशेष विवेचनार्थ—'वेद की कुंजी-प्रथम समुल्लास' पढ़िये।

ईश्वर के एक होने से ही उसके सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, सर्वव्यापक, सर्वेश्वर, सर्वशक्तिमान् आदि गुण चरितार्थ होते हैं। एक से अधिक होने पर वह सर्वव्यापक आदि गुण वाला कैसे हो सकता है। ऐसे गुणयुक्त ईश्वर को मानने से ही उसकी 'कर्मफल व्यवस्था' पर पूर्णत: विश्वास जमता है। इसी विश्वास पर ही कोई सर्वथा पवित्र रहता है तथा सदा शुभ कर्मों में जुटा रहता है।

क्रमश:.....

ऋषिवर-वन्दना

महाशिवरात्रि पर मन्दिर की दशा देख,
मूल चिन्तित हुए समझ में न आया था।
चूहों की दौड़ देखी हृदय ही पलट गया,
कहा पूज्य पिताजी यह चूहा क्यों आया था।
पिता ने समझाया खूब मूल समझे नहीं,
उनके मन में सत्य शिव जो समाया था।
धन्य थे ऋषिवर प्रकट हुआ दिव्य ज्ञान,
एक ईश-चिन्तन का नियम बनाया था।

(2)

छोड़ दिए घर-बार-प्यार व दुलार सब,
एक सत्य शिव को ही मन में बसाते हैं।
दर-दर भटकते थे राष्ट्र की रक्षा-हित,
जंगल और झाड़ी में चक्कर लगाते हैं।
देश की दशा देखी विकल होकर रो-पड़े,
अहो आर्यावर्त देश! सब को बताते हैं।
दया के महासागर थे देवदयानन्द जी,
ऐसे दिव्य ऋषि को शीश हम झुकाते हैं।

—सुरेन्द्र कुमार 'सरस' रोहतक मो० 9254069111

thearyasamaj.org

जीवन की सफलता का मूल मन्त्र असतो मा सद्गमय

❑ मनमोहन कुमार आर्य

भारतीय धर्म व संस्कृति में बृहदारण्यकोपनिषद् के वाक्य **'असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमयेति'** का विशेष महत्व है। **'असतो मा सद्गमय'** में ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि मैं सत्य मार्ग पर चलूं। इसका अर्थ है कि मैं असत्य मार्ग पर न चलूं। प्रश्न उत्पन्न होता है कि सत्य मार्ग पर चलना आवश्यक क्यों है और असत्य मार्ग पर न चलना जरूरी क्यों है? सत्य मार्ग को ऋजु मार्ग भी कहते हैं। ऋजु मार्ग सीधा मार्ग होता है और अन्य मार्ग लम्बे व टेढ़े होने के साथ उन पर चलने से यात्री मार्ग भटक कर मंजिल से दूर चले जाते हैं। सत्य मार्ग वह मार्ग होता है जिस पर चलकर अन्ततः मंजिल या लक्ष्य की प्राप्ति निश्चित होती है। असत्य मार्ग उल्टा मार्ग है जिससे हम लक्ष्य के विपरीत चलते हैं या लक्ष्य से दूर होते जाते हैं। अब इस सूक्ति में जिस सतपथ की बात कही गई है, वह कौन-सा पथ है और उस पर चलकर हम कहां पहुंचेंगे, यह विचार करना प्रासंगिक एवं आवश्यक है। हम मनुष्य हैं और मनुष्य नाम हमारे मननशील होने वा प्रत्येक कार्य को सत्य वा असत्य का विचार करके करने के कारण मिला है। मनन करने पर हमें ज्ञात होता है कि जीवन कर्मों को करने का नाम है। कर्म दो प्रकार के होते हैं जिन्हें अच्छा व बुरा, सत्य व असत्य, शुभ व अशुभ अथवा पुण्य वा पाप कह सकते हैं।

अब यह देखना है कि सत्य कर्म करने से क्या प्राप्त होता है और असत्य या पाप करने से मनुष्य को क्या लाभ व हानि होती है। सत्य कर्म ऐसा है कि एक विद्यार्थी तपपूर्वक अध्ययन कर परीक्षा दे तो उसे उसके पुरुषार्थ के अनुरूप फल व सफलता मिलती है और जो विद्यार्थी अध्ययन की उपेक्षा कर प्रतिगामी व विपरीत कार्य करता है, वह असफल होता है। इसी प्रकार से सत्य कर्मों को करके उन्नति व असत्य कर्म व कार्यों को करके अवनति होती है। उन्नति भी दो प्रकार की कह सकते हैं। एक तो सांसारिक उन्नति जिसमें सुख-सुविधाओं की वस्तुओं की प्राप्ति व धन सहित शारीरिक उन्नति को भी सम्मिलित कर सकते हैं और दूसरी उन्नति आध्यात्मिक उन्नति होती है। आधात्मिक उन्नति का अर्थ है कि यदि हम संसार की उत्पत्ति, स्थिति व प्रलय की अवस्था पर विचार करते हैं तो हमें यह सृष्टि परमाणुओं से बनी हुई दृष्टिगोचर होती है। इन परमाणुओं को हम अनादि व मूल प्रकृति, अनुत्पन्न, नित्य, अजन्मा, सनातन व अविनाशी कह सकते हैं। मूल प्रकृति के इन परमाणुओं का संयोग कराने वाला कोई अवश्य होना चाहिये जिससे सूर्य, चन्द्र, पृथिवी व अन्य सभी पदार्थों की उत्पत्ति हो सके। वह सत्ता ईश्वर है। इससे ईश्वर का अस्तित्व होना सिद्ध होता है। इस पर निरन्तर व नियमित रूप से चिन्तन करने पर ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति का ज्ञान होता है जिससे हमारी ईश्वर से निकटता होकर हम उसकी उपासना में संलग्न हो जाते हैं। इसका फल हमारे गुण, कर्म व स्वभाव में परिवर्तन होकर वह ईश्वर के अनुरूप बन जाते हैं। इन शुभ कर्मों की वृद्धि और पूर्व पाप व असत्य कर्मों का भोग हो जाने पर मनुष्य की इस जन्म व परजन्म में उन्नति होती है। सत्यमार्ग पर चलने वाले व्यक्ति का भावी जन्म अच्छी योनि, अच्छे कुल व अच्छे प्रदेश व लोक में होना शास्त्र प्रमाण व तर्क से सिद्ध होता है। कालान्तर में सत्य व शुभ कर्मों की वृद्धि व ईश्वर से अति-निकटता वा असम्प्रज्ञात समाधि की प्राप्ति होने पर जीवात्मा वा मनुष्य अशुभ कर्म से निवृत होकर जन्म-मरण से छूट जाता है। इस अवस्था का नाम मुक्ति होता है जिसका वर्णन हमारे शास्त्रों और महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों में उपलब्ध है। इसके विपरीत असत्य मार्ग पर चलने व अशुभ कर्म करने से मनुष्य बन्धनों में फंस कर, अवनति को प्राप्त होकर अपने वर्तमान व भावी जीवन अर्थात् पुनर्जन्म को बिगाड़ लेता है। अतः **'असतो मा सद्गमय'** का सन्देश जीवन को उन्नति के पथ पर आरूढ़ करना व अपनी वर्तमान स्थिति को सुधार कर लक्ष्य व लक्ष्यों की प्राप्ति है।

मनमोहन कुमार आर्य

संसार में अनेक महापुरुषों के जीवन हमें ज्ञात हैं। यह सब **'असतो मा सद्गमय'** के ही प्रतीक हैं। संसार में जिन जन्म लेने वाले व्यक्तियों की चर्चा नही की जाती, वह प्रायः इस मन्त्र-विचार-सूक्ति के विपरीत आचरण करने वाले सामान्य कोटि के लोग होते हैं। महर्षि दयानन्द संसार के सभी मनुष्यों से भिन्न महापुरुष थे। उन्होंने संस्कृत के अलौकिक आर्ष व्याकरण के अध्ययन के साथ अपने समय में उपलब्ध वेद, शास्त्रीय ग्रन्थों व सहस्रों अन्य ग्रन्थों को भी पढ़ा व समझा था। उन्होंने योग का सफल अभ्यास कर असम्प्रज्ञात समाधि को भी सिद्ध किया था। अपने गुरु प्रज्ञाचक्षु दण्डी विरजानन्द सरस्वती से आर्ष व्याकरण एवं शास्त्रों का अध्ययन करने के बाद उनकी प्रेरणा से उन्होंने संसार को सत्य मार्ग पर चलाने की प्रतीज्ञा की थी और उसे प्राणपण से पूरा करने का प्रयास किया। सत्यपथ पर चलते हुए उन्होंने लगभग 18 बार विषपान किया परन्तु सतपथ का मार्ग नहीं छोड़ा। उनका सारा जीवन **'असतो मा सदगमय'** का जीता जागता व सर्वोत्तम उदाहरण है। जो विशेषता उनके जीवन में है वह अन्य महापुरुषों के जीवन में देखने को नहीं मिलती। उनके जीवन चरित्र का अध्ययन कर तथा उसे आचरण में लाकर भी हम अपने जीवन को उन्नत बना सकते हैं। उन्होंने इसी उद्देश्य से सत्यार्थ प्रकाश नाम से संसार का अनूठा व अपूर्व ग्रन्थ लिखा है। 14 समुल्लासों में रचित इस ग्रन्थ के प्रथम 10 समुल्लास **असतो मा सद्-गमय** का क्रियात्मक रूप प्रस्तुत करते हैं तथा अन्त के 4 समुल्लास **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इस ग्रन्थ का अध्ययन करना समुद्र में एक गोता लगाना और बहुमूल्य मोतियों को पाने के समान है और अन्यत्र श्रम करना मानो सारा जीवन गंवाकर कौड़ियों को पाना है। सभी मनुष्यों को न्यूनातिन्यून एक बार निष्पक्ष होकर इस ग्रन्थ का अध्ययन अवश्य करना चाहिये। सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करने से वेदों के सत्य स्वरूप का ज्ञान भी होता है। वेद स्वयं भी **'असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय अमृतो मा अमृतं गमय'** का ही ज्ञान प्राप्त कराकर इनकी प्राप्ति के साधनों का भी मार्ग प्रशस्त करते हैं। वेदेतर संसार में जितने भी धार्मिक ग्रन्थ हैं उनमें सत्य भी है और बहुत कुछ असत्य भी है, जिसका दिग्दर्शन सत्यार्थ प्रकाश में कराया गया है। अतः वेदों व सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में सभी ग्रन्थ सत्यासत्य को सामने रखकर विचारणीय व संशोधनीय है। यह ऐसा ही है जैसे हम ज्ञान व विज्ञान के क्षेत्र में नित्यप्रति इसे अपडेट व संशोधित करते रहते हैं। यदि ऐसा न करते तो संसार में जो आज उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं, वह न हुई होतीं। यही कार्य धार्मिक ग्रन्थों में भी होना चाहिये अर्थात सत्य का अनुसंधान और तदानुसार संशोधन।

सत्य का अनुसंधान कर महर्षि दयानन्द ने मानव समाज की सर्वांगीण उन्नति का एक नियम बनाया। वह नियम है कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। यह नियम भी **असतो मा सद्गमय व तमसो मा ज्योतिर्गमय** का ही रूपान्तर व पर्याय है। इसी को भिन्न प्रकार से उन्होंने एक अन्य नियम में भी कहा है कि **सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिय** यह भी **असतो मा सद्गमय** का ही एक रूप है। इसी क्रम में सभी मतों के अनुयायियों के लिए यह भी विचारणीय है कि क्या हम, सभी व कोई एक भी, कर्म के फलों से बच सकते हैं? इसका उत्तर है कदापि नहीं। मांसाहार, अण्डे का सेवन, सामिष भोजन, धूम्रपान, मदिरापान, असत्य भाषण व व्यवहार एवं दूसरों का अपकार करना अशुभ व अवैदिक कर्म हैं। इन कर्मों को करके हम कर्मबन्धन में फंसते हैं। हमें यह भी जानना है कि पुनर्जन्म का सिद्धान्त केवल हिन्दुओं, सिखों, बौद्धों व जैनियों के लिए ही नहीं है अपितु यह नियम व सिद्धान्त संसार के सभी मनुष्यों व मनुष्येतर प्राणियों पर भी लागू होता है। इसका कारण है कि संसार में ईश्वर एक है। वही सब मनुष्यों व प्राणियों को उनके कर्मों व प्रारब्ध के अनुसार जन्म देता है। उसका पुनर्जन्म का सिद्धान्त भी सभी मतों व धर्म के लोगों के लिए एक समान है। अतः जीवन की आध्यात्मिक व भौतिक उन्नति के लिए वैदिक मान्यताओं व सिद्धान्तों किंवा वैदिक धर्म को अपनाना सभी के लिए आवश्यक है जिससे हम मनुष्य जीवन के सर्वोत्तम पुरुषार्थ धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष से वंचित न हों। निर्णय करना हमारे व सभी मतों के मानने वाले अनुयायियों के हाथ में है। इसी क्रम में यह भी विचार व तर्क सिद्ध है कि संसार में स्वर्ग, जन्नत, नरक व दोजख आदि सब इस पृथिवी व इसके समान अन्य लोकों पर ही है। अच्छे कर्मों का फल सुख है और सुख विशेष ही स्वर्ग है। इसी प्रकार अशुभ कर्मों का परिणाम दुःख है और उसका परिणाम नरक आदि भोग हैं। जीवात्मा जन्म लेकर ही सुख व दुःख का भोग कर सकता है। मृत्यु व अगले जन्म के बीच जीवात्मा को कोई सुख व दुख नहीं होता। यह अवस्था एक प्रकार से सुषुप्ति की अवस्था होती है जिसमें जीवात्मा को इन्द्रियों से अनुभव होने वाले सुख व दुख अनुभव नहीं होते। इस विवेचना से यह निष्कर्ष निकलता है कि वेदाध्ययन सभी को अवश्य करना चाहिये अन्यथा हमें उन्नति व मुक्ति का लाभ नहीं होगा और हम बार-बार जन्म लेकर मृत्यु को प्राप्त होते रहेंगे।

यजुर्वेद का एक प्रमुख मन्त्र है, **'ओम् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव।।'** इस मन्त्र में सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि ईश्वर मेरे सभी दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर करे और जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव व पदार्थ हैं, वह सब हमें प्राप्त कराये। यह प्रार्थना भी **असतो मा सद्गमय** की पूरक होने से सत्य मार्ग पर चलने के लिए प्रोत्साहित करती है। आइये, जीवन को सत्य मार्ग पर चलाते हुए जीवन से तम व अन्धकार को दूर करें और अमृत वा मोक्ष की प्राप्ति करें।

thearyasamaj.org

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन की झलकियाँ

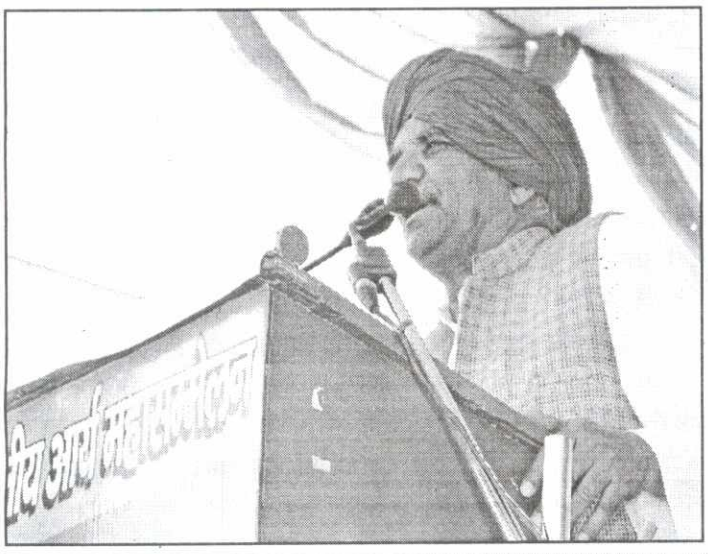

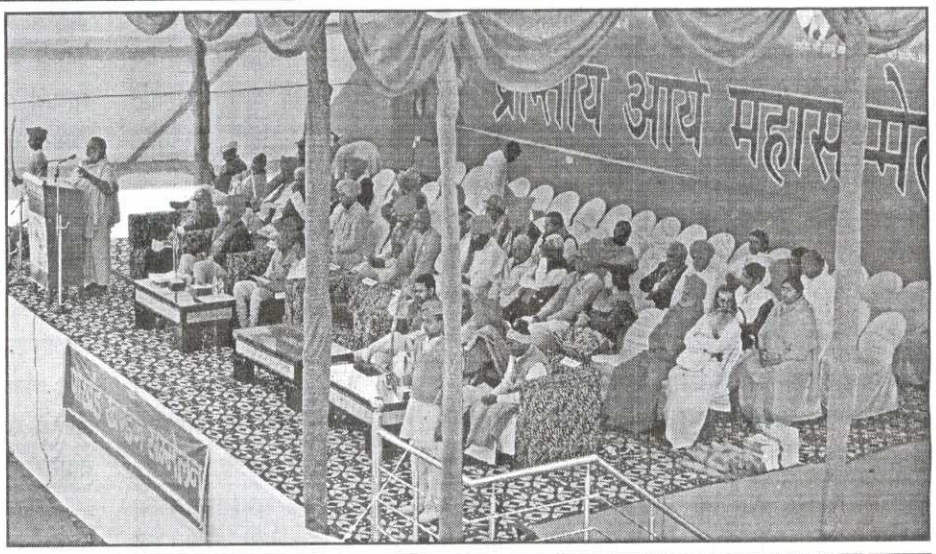

thearyasamaj.org

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन की झलकियाँ

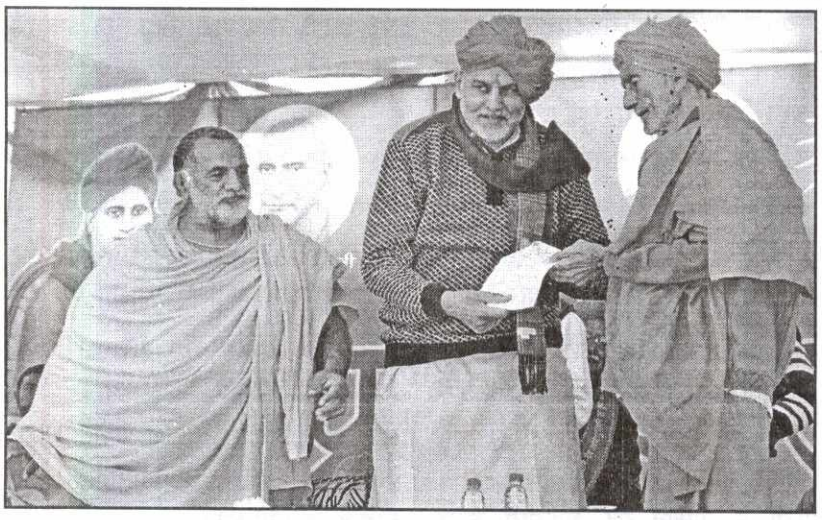

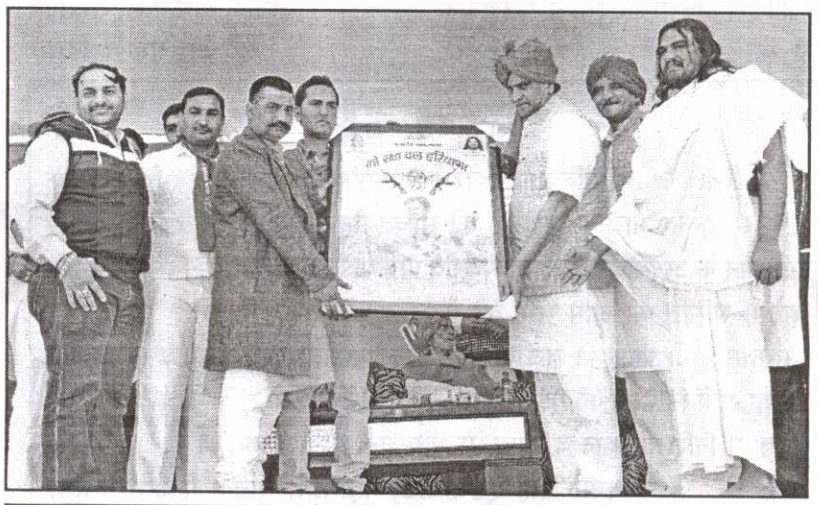

thearyasamaj.org

गोशाला नीमड़ीवाली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

मकर संक्रान्ति महोत्सव एवं ऋषिकुल गोशाला नीमड़ीवाली (भिवानी) का उत्सव 14 जनवरी 2015 को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प्रात: श्री ज्ञानचन्द शास्त्री द्वारा यज्ञ किया गया। उन्होंने ही मंच का संचालन किया।

प्रात: 11 बजे स्वामी दयानन्द गिरि की अध्यक्षता में उत्सव शुरू हुआ। मुख्य अतिथि श्री अश्विन शैणवी पुलिस अधीक्षक थे। विशिष्ट अतिथि श्री अजय शर्मा सहायक उपायुक्त आयकर भारत सरकार थे। मंच पर वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, उमेद शर्मा, डॉ० भूपसिंह आर्य, प्रो० सत्यपाल आर्य, रामकुमार आर्य प्रधान वेदप्रचार मण्डल हिसार, बहन राजकुमारी कितलाना, प्रिं० शकुन्तला आर्या, मामराज आर्य आदि उपस्थित थे। उपरोक्त आर्यों व गोशाला के प्रधान व गांव के सरपंच श्री शेरसिंह आर्य ने मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथि का पुष्प-मालाओं से सम्मान किया। मुख्य अतिथि जी ने गऊ माता के गुण गिनाये तथा प्रत्येक गांव गोशाला खोलने का प्रयत्न करो। आगे उन्होंने कहा शराब आदि बुराइयों से बचना चाहिए। मंच पर आकर दो शराबियों ने शराब छोड़ने की घोषणा की। पुलिस अधीक्षक ने कई भिन्न-भिन्न कार्यों में जिन्होंने उंचाइयों को छुआ है, उनको सम्मानित किया। पं० जसविन्द्र आर्य, बहन सुनीति आर्या एवं ज्ञानेन्द्र तेवतिया के प्रेरणा दायक भजन हुए। देशी घी का प्रसाद बांटा गया। श्री शेरसिंह आर्य ने सबका धन्यवाद किया तथा दिलखोलकर लोगों ने दान दिया।

—सूरजभान पटवारी

लोहड़ी एवं मकरसंक्रान्ति महोत्सव सम्पन्न

दिनांक 13 जनवरी 2015 को स्त्री आर्यसमाज डोगरा मोहला हिसार में मध्याह्न 2 बजे से 5 बजे तक लोहड़ी एवं मकर संक्रान्ति पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ। चार दम्पतियों ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। मंच का संचालन आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार ने किया। मुख्य अतिथि श्री गौतम सरदाना थे। समाजसेवी श्री रामसहाय चुग को शाल व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर स्वामी सर्वदानन्द जी का आध्यात्मिक उपदेश हुआ। मुख्यवक्ता श्री चन्द्रदेव शास्त्री (झज्जर) थे। उन्होंने पर्व के महत्त्व तथा वैदिक सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला। श्रीमती संगीता आर्या के शिक्षाप्रद भजन हुये।

मंच पर डॉ. रविदत्त शास्त्री, आचार्य दयानन्द शास्त्री, महात्मा आनन्दमुनि, वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, पं० शैलेन्द्र शास्त्री, चौ० हरिसिंह सैनी, रामकुमार आर्य प्रधान वेदप्रचार मण्डल आदि उपस्थित थे। प्रधाना शन्नोदेवी ठकराल ने सबका धन्यवाद किया। शान्तिपाठ के बाद रेवड़ी व मूंगफली का प्रसाद बांटा गया।

—राकेश काठपाल, मन्त्राणी
स्त्री आर्यसमाज, हिसार

धन्यवाद-पत्र

सभा से सम्बन्धित सभी आर्यसमाजों/शिक्षण संस्थाओं/जिला वेदप्रचार मण्डलों/सभी प्रतिनिधियों, आर्यसमाज के सदस्यों व अन्य सभी कार्यकर्त्ताओं का प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन दिनांक 8 फरवरी 2015 को सफल बनाने में दिए गए सहयोग का आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक की तरफ से हार्दिक धन्यवाद किया जाता है।

आचार्य बलदेव	आचार्य विजयपाल	रामपाल आर्य
सभा-संरक्षक	सभा-प्रधान	सभा-मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक

वेबसाईट-सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन दिनांक 8 फरवरी 2015 को अपनी अधिकारिक वेबसाईट को प्रक्षेपण (शुभारम्भ) किया है जो www.apsharyana.org. के नाम से है। अधिक जानकारी एवं सुझाव के लिए मोबाइल नं० 9812611701 पर सम्पर्क करें।

—सभामन्त्री

स्वाइन फ्लू से बचाव हेतु काढ़ा पिलाया

कोटा, 9 जनवरी। आर्यसमाज जिला सभा कोटा द्वारा आज इन्द्रप्रस्थ इण्डस्ट्रीज एरिया, रोड नं. एक पर स्थित हरसुल रेजीडेन्सी हॉस्टल के बाहर स्वाइन फ्लू से बचाव हेतु औषधीय काढ़ा वितरित किया गया। आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने काढ़ा वितरित करते हुए कहा कि यह औषधीय काढ़ा स्वाइन फ्लू, डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया, बुखार आदि रोगों से बचाव हेतु लाभकारी है।

आर्यसमाज विज्ञाननगर के पूर्व प्रधान सोमेश गांधी की देखरेख में तुलसी, गिलोय, नीम, कालीमिर्च, हल्दी, गुड़, मिश्री से मिश्रित यह औषधीय काढ़ा तैयार किया गया। आज कार्यक्रम के आयोजक समाजसेवी शम्मी कपूर ने बताया कि आर्यसमाज के इस सेवा कार्य में बहुत प्रभावित हूं। समय-समय पर इनके साथ मुझे सेवा का अवसर मिलता है।

श्रीमती संतोष चौहान ने कहा कि यह काढ़ा शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। श्रीमती दीपा कपूर ने बताया कि आज स्वाइन फ्लू ने औषधीय काढ़े को पीने के लिए कोचिंग स्टूडेन्ट की लम्बी लाइन लग गई। लगभग 1128 स्टूडेन्ट्स ने काढ़ा पीया।

काढ़ा बनाने में सोमेश गांधी, राजीव आर्य, शम्मी कपूर, डॉ. श्रीमती संतोष चौहान, श्रीमती दीपा कपूर, संजय सेठी का सहयोग रहा।

सूचना

वैदिक शिक्षा समिति, कन्या गुरुकुल महाविद्यालय पंचगांव (भिवानी) के सभी सम्मानित आजीवन सदस्यों को सूचित किया जाता है कि समिति के नए संविधान के अनुमोदन के लिए व चुनाव प्रक्रिया के लिए विचार-विमर्श करने के बारे में समिति की आम सभा की बैठक का आयोजन दिनांक 1 मार्च 2015 (रविवार) को प्रात: 11 बजे कन्या गुरुकुल महाविद्यालय पंचगांव (भिवानी) के प्रांगण में निश्चित की गई है। अत: आप सभी सदस्यों से अनुरोध है कि उक्त बैठक में निश्चित स्थान व समय पर भाग लेना सुनिश्चित करें।

—जगमालसिंह एडवोकेट, महामंत्री, वैदिक शिक्षा समिति,
कन्या गुरुकुल महाविद्यालय पंचगांव (भिवानी)

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	कन्या गुरुकुल मोरमाजरा जिला करनाल	13 से 15 फरवरी 2015
2.	गुरुकुल झज्जर	21 से 22 फरवरी 2015
3.	आर्यसमाज रसूलपुर जिला महेन्द्रगढ़	28 फर० से 1 मार्च 2015
4.	आर्यसमाज औरंगाबाद मित्रौल जिला पलवल	27 फर० से 1 मार्च 2015
5.	आर्यसमाज खेड़की जिला महेन्द्रगढ़	7 से 8 मार्च 2015
6.	आर्यसमाज शेखूपुरा खालसा, निकट घरोण्डा जिला करनाल	20 से 22 मार्च 2015

—सभामन्त्री

शोक-समाचार

(1) डॉ० नरेन्द्र गहलावत की माता श्रीमती ज्ञानोदेवी धर्मपत्नी स्व० श्री वीरसिंह म०नं० 1185 सैक्टर-3, रोहतक का आकस्मिक निधन दिनांक 10 फरवरी 2015 को प्रात: 8.30 बजे हो गया। वे 91 वर्ष की थीं। उनका दाह-संस्कार पूर्णतया वैदिक रीति से मन्त्रोच्चारण के साथ किया गया। उनके अन्दर धार्मिकता कूट-कूटकर भरी हुई थी। उन्होंने अपने पूरे जीवन में कभी भी चाय तथा अंग्रेजी दवाई का सेवन नहीं किया। अतिथि सत्कार के लिए सदैव तत्पर रहती थीं। वे अपने पीछे तीन पुत्र तथा चार पुत्रियों का भरा पूरा परिवार छोड़कर गई हैं। आप सभा के सहायक कार्यालयाधीक्षक श्री सत्यवान आर्य की बूआ थीं।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा व्यथित परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति देवे।

—शेरसिंह, सभा-कार्यालयाधीक्षक

(2) चौ० धनाराम प्रधान किसान यूनियन का देहान्त दिनांक 17.01.2015 को हो गया। उनका दाह-संस्कार पूर्णतया वैदिक रीति से किया गया। उनकी शोक सभा आर्यसमाज इसराना में हुई। वे आर्यसमाज के कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भाग लेते थे। परमपिता परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति तथा व्यथित परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति देवे।

—रामचन्द्र आर्य, उपप्रधान, आर्यसमाज इसराना (पानीपत)

thearyasamaj.org

ईंधन बचाओ जारूकता अभियान में गुरुकुल की सहभागिता

कुरुक्षेत्र 31 जनवरी, 2015 पेट्रोल संरक्षण शोध संघ की ओर से गुरुकुल में ईंधन बचाओ, जन-धन *बढ़ाओ जागरूकता अभियान आयोजित* किया गया, जिसमें गुरुकुल के लगभग 650 छात्रों ने भागीदारी की। इस जागरूकता अभियान के अन्तर्गत पोस्टर मेकिंग, स्लोगन आदि प्रतियोगिताएं संघ की ओर से सम्पन्न हुई, जिसमें श्रेष्ठ 42 छात्रों को पारितोषिक दिए गये। भारत पेट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड के टैरेटरी मैनेजर अच्युत त्रेहान ने विद्यार्थियों को ईंधन बचाओ, जन-धन बढ़ाओ के विषय की जानकारी देते हुए कहा कि तेल का अत्यधिक प्रयोग अगर इसी प्रकार से चलता रहा तो आगामी 20 वर्षों में इस अमूल्य संसाधन के लिए लोग तरसेंगे, संघ के सौजन्य से छात्रों में सफेद टी-शर्ट व सफेद टोपियां वितरित की गई ताकि इस कार्यक्रम की महत्ता से अवगत कराया जा सके।

गुरुकुल के उपप्रधान राजेन्द्र सिंह कलेर, प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह, प्रशासक कंवरजीत आर्य ने भी ईंधन बचाओ जागरूकता अभियान की महत्त्वपूर्ण जानकारियां दीं।

इस अवसर पर भारत पेट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड के असिस्टेंट मैनेजर संजीव ने भी तेल के भावी संकट पर प्रकाश डाला।

गुरुकुल आर्यनगर में स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया

दिनांक 26.1.2015 को गुरुकुल आर्यनगर (हिसार) में स्वतन्त्रता दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री मुख्य अधिष्ठाता ने ध्वजारोहण किया। ब्र० दीपकुमार आर्य उपप्रधान वेदप्रचार मण्डल हिसार ने अध्यक्षता की। गुरुकुल के तीन छात्रों ने ईश्वर भक्ति व देशभक्ति के भजन रखे।

आचार्य जी ने 66वें गणतन्त्र दिवस के महत्त्व पर प्रकाश डाला। सभा प्रधान ब्र०जी ने देशभक्तों को याद किया। साथ में चरित्र निर्माण व विद्यार्थियों के कर्त्तव्य बताये। इस अवसर पर श्री गणेशदत्त शास्त्री, संजीव शास्त्री, नरेश अध्यापक, राधेश्याम शास्त्री आदि अनेक आर्यजन उपस्थित थे। ब्रह्मचारी जी ने बच्चों को लड्डू बांटे तथा 1100 रुपये गुरुकुल को दान दिया।

—रणधीर सिंह अध्यापक, गुरुकुल आर्यनगर (हिसार)

आर्यसमाज इसराना (पानीपत) प्रगति की ओर

आर्यसमाज इसराना (पानीपत) द्वारा प्रत्येक मास के दूसरे रविवार को मासिक सत्संग किया जा रहा है जिसमें ग्राम के अनेक युवा व युवतियां भी सम्मिलित होती हैं। सभी नवयुवकों ने ग्राम में नशा के खिलाफ व स्वच्छता अभियान चला रखा है। इस सत्संग में ग्राम के लगभग 40 नौजवान युवकों ने यज्ञोपवीत धारण किया।

इस अवसर पर इसराना हल्के के विधायक श्री कृष्ण पवार जी ने पहुँचकर इस कार्यक्रम को देखकर 5100 रुपये की राशि सहायतार्थ भेंट की।

—रामचन्द्र आर्य, उपप्रधान, आर्यसमाज इसराना (पानीपत)

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये।

—आचार्य बलदेव

ब्रह्मचर्य सन्देश

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

'ब्रह्म' शब्द के अनेक अर्थों में तीन अर्थ ईश्वर, वेद और वीर्य भी हैं। साध्य को प्राप्त करने के लिए साधनों का प्रयोग करना पड़ता है। यहाँ ईश्वर को प्राप्त करने के लिए वेदज्ञान की आवश्यकता है। वेदज्ञान को ईश्वर प्राप्ति का साधन बनाने के लिए वीर्य संरक्षण की आवश्यकता है। इसीलिए शास्त्रों में कहा है कि उस परमात्मा जिसका मुख्य नाम 'ओ३म्' है, उसकी प्राप्ति के लिए ही ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं। 'वीर्य' रक्षण से रक्त, मांस, अस्थि आदि सभी धातुएं शुद्ध व पुष्ट होकर जहाँ व्यक्ति सांसारिक रूप में स्वयं को सबल, सनाथ, साहसी, स्वावलम्बी अनुभव करता है वहीं अपनी इस अमूल्य धरोहर की रक्षा के लिए ईश्वर से नित्यप्रति प्रार्थना करता हुआ, इस अमूल्य धरोहर की ओर प्रवृत्ति के लिए ईश्वर की स्तुति करता हुआ तथा जन्म-जन्मान्तर में इस धरोहर से वंचित होने से बचने के लिए उस ईश्वर की स्तुति करता हुआ आत्मिक आनन्द भी प्राप्त करता है।

'ब्रह्मचर्य' का सर्वांश में पालन करने वाले हमारे पूज्य, प्यारे महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में स्पष्ट करते हैं कि यह ब्रह्मचर्य तीन प्रकार का होता है। 24 वर्ष की आयु तक जिस ब्रह्मचर्य का पालन किया जाता है, उस ब्रह्मचर्य को कनिष्ठ (छोटा, लघु) ब्रह्मचर्य कहते हैं। जो इस आयु तक ब्रह्मचर्य का पालन करता है, उसके शरीर में प्राण बलवान हो जाते हैं, वह रोग रहित रहता है। 44 वर्ष की आयु तक जिस ब्रह्मचर्य का पालन किया जाता है, उसे मध्यम ब्रह्मचर्य कहते हैं। इस प्रकार के ब्रह्मचर्य का जो मनुष्य पालन करता है उसके प्राण, इन्द्रियां, मन, बुद्धि और आत्मा बलयुक्त हो जाते हैं। ऐसा मनुष्य सब दुष्टों को रुलाने व श्रेष्ठों का पालन करने में समर्थ हो जाता है।

48 वर्ष की आयु तक जिस ब्रह्मचर्य का पालन किया जाता है, उसे उत्तम ब्रह्मचर्य कहते हैं। इस ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले मनुष्य के प्राण अपने वश में हो जाते हैं। वह आनन्दित होकर अपने ब्रह्मचर्य का लोप नहीं करता। ऐसा मनुष्य अपनी आयु 400 वर्ष तक बढ़ा सकता है।

ऋषियों का स्पष्ट संदेश है कि जो मनुष्य 24, 44 या 48 वर्ष की आयु तक ब्रह्मचर्य का पालन करके यदि विवाह करा लेता है तो भी उसे लम्पटता नहीं करनी चाहिए। एक पत्नीव्रत का पालन करना चाहिए। अपनी पत्नी के साथ केवल सन्तान उत्पत्ति के लिए ही वीर्य दान करना चाहिए। पत्नी द्वारा गर्भ धारण करने पर एक वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचारी रहना चाहिए। इस प्रकार के व्रतधारी मनुष्य गृहस्थ होने पर भी ब्रह्मचारी कहलाते हैं। श्री राम, श्री लक्ष्मण, श्रीकृष्ण ऐसे ही महापुरुष थे। जो मनुष्य 48 वर्ष की आयु तक ब्रह्मचर्य का पालन करके वेद विद्या पढ़कर संसार का अत्यन्त उपकार करना चाहते हैं, वे इस आयु के पश्चात् भी विवाह नहीं करते। ऋषि दयानन्द ऐसे ही महापुरुष थे। जब से अपने इस आर्यावर्त से ब्रह्मचर्य की प्रणाली का लोप हुआ तब से यहां के मनुष्यों में आरोग्यता, सौम्यता, दया, कृतज्ञता, परोपकार, निर्भीकता, साहस आदि सद्गुणों का भी ह्रास हुआ है। ब्रह्मचर्य को अपनाने से हम फिर से इन सद्गुणों की प्राप्ति कर सकते हैं।

सम्बन्धित कुछ सूक्तियां—

ब्रह्मचर्य ही जीवन है। ब्रह्मचर्य की हानि मृत्यु है। ब्रह्मचर्य के पालन से बल बढ़ता है। देवताओं ने ब्रह्मचर्य के पालन से मृत्यु को जीत लिया। विद्यार्थी ब्रह्मचर्य का पालन करे। शिक्षक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए विद्या पढ़ाए। राजा ब्रह्मचर्य का पालन करता हुआ प्रजा की रक्षा करे। ब्रह्मचर्य के पालन से आरोग्यता, बुद्धि, बल की प्राप्ति होती है। ब्रह्मचर्य के नाश से तेज, बुद्धि धैर्य, बल का नाश होता है। प्रातः 4 बजे अवश्य उठें। शौच, दन्तधावन, स्नान, संन्ध्या, ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना, योगाभ्यास नित्य किया करें। गंदी कथाओं, बुरे लोगों का संग, गंदी बातों के ध्यान से सदा पृथक् रहें।

आर्यसमाज होडल का चुनाव सम्पन्न

आर्यसमाज होडल जिला पलवल का चुनाव दिनांक 28.12.2014 रविवार को श्री हेतराम गर्ग की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ।

प्रधान-पं० नेतराम शास्त्री, मन्त्री-श्री भद्रसेन सचदेवा, कोषाध्यक्ष-श्री नरेन्द्र आर्य।

—चतरसिंह आर्य भजनोपदेशक

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एवं महाशिवरात्रि बोधरात्रि बन गई

❑ आचार्य राजकुमार शर्मा, वैदिक प्रवक्ता

भारतीय संस्कृति व सभ्यता की रक्षा तथा उत्थान के लिए इस पावन पवित्र ऋषियों की धरती को अन्धविश्वासों तथा कुरीतियों से मुक्त कराने के लिए, पराधीन भारत को स्वाधीन कराने के लिए, परमपिता परमेश्वर की अमृतमयी पवित्र वेदवाणी के प्रचार एवं प्रसार के लिए, वेद के अमर उद्घोष **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** अर्थात् **'समस्त संसार का आर्य बनाओ'** को प्रसारित करने के लिए 19वीं शताब्दी में भारत के ऐतिहासिक प्रान्त गुजरात के टंकारा नामक ग्राम में बालक मूलशंकर का जन्म पिता श्री कर्षण जी तिवारी एवं माता मूंगीबाई के घर में फाल्गुन मास कृष्णपक्ष दशमी तिथि सम्वत् 1880 तदनुसार 10 फरवरी सन् 1824 को हुआ। समाज सुधारक अनेक हुए परन्तु उन सभी समाज सुधारकों में महर्षि दयानन्द का स्थान पृथक् तथा अद्भुत दृष्टिकोण के साथ दृष्टिगोचर होता है। महर्षि दयानन्द अपने युवावस्था में अपने घर को सर्वसुख सम्पन्न सुविधाओं को 23 वर्ष की आयु में ठोकर मारकर गृहत्याग किया। घनघोर जंगलों में ऋषि ने घोर तप किया, कष्ट सहन किये, दु:खों को सहा, भूखे और प्यासे रहे। सर्दी और गर्मी की चिन्ता नहीं की। कांटों के मार्ग पर चले, फूलों को त्यागा परन्तु वेद के उस वाक्य से कभी पीछे नहीं हटे जिसमें परमात्मा से भक्त कहता है कि **'मा प्रगामपथो वयम्'** अर्थात् हे ईश्वर! हम कभी वेदमार्ग से, सत्यमार्ग से, धर्म मार्ग से विचलित न होवें और उसी धर्म मार्ग का अनुसरण करते हुए ऋषि गंगोत्री में गए, अलकनन्दा जैसी नदियों के संगम पर जाकर तप किया, नर्मदा नदी के तट पर समाधि लगाई, गंगा की ठण्डी रेत पर परमात्मा का ध्यान किया, जोशीमठ और ओखीमठ में योगियों का अन्वेषण किया, यमनोत्री में योगाभ्यास किया, परन्तु कहीं भी उस ममहान् ऋषि को सत्य वेत्ता नहीं मिला, सच्चा योगी नहीं मिला। अन्त में वह महान् ऋषि पूर्णानन्द योगी की प्रेरणा से प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द जी के आश्रम में गई और वहां उस महर्षि ने शिष्य रूप में रहकर आर्ष शिक्षा प्राप्त की और सम्पूर्ण विश्व आर्य श्रेष्ठ बनाने का संकल्प ले लिया।

आचार्य राजकुमार शर्मा

वह संकल्प जो बचपन में शिवरात्रि के पावन पर्व पर रात्रि को शिवलिंग पर चूहे चढ़ते देख सच्चे शिव को जानने की जिज्ञासा के रूप में प्रादुर्भूत हुआ उसी समय सच्चे शिव को जानने के लिए ऋषि ने गृहत्याग व तप का व्रत लेकर प्रभु की राह ली और विकल पड़े कांटों से भरे अनन्त पथ पर जहां समाज के अपशब्द, पत्थर, ईंट, सांप आदि थे। उस संकल्प की पूर्ति के लिए ऋषि ने तात्कालीन विपरीत परिस्थितियों में भी पौराणिक जगत् की कठोर आस्था पर तर्क शक्ति का कुठाराघात किया। जिस हिन्दू समाज में महिलाओं को वेद पढ़ने का, शिक्षा प्राप्ति का, यज्ञ करने का कोई अधिकार ही नहीं था। शिक्षा के नाम पर अशिक्षा का तथा विद्या के नाम पर अविद्या का, जीवित माता-पिता की सेवा के स्थान पर मृतक व्यक्तियों का श्राद्ध व तर्पण का, मूर्तिपूजा का, मन्दिरों में चरित्र के नाम पर चरित्रहीनता का नंगा नाच हो रहा था। जिस हिन्दू समाज में पर्वत की चोटों से जल रूप में प्रवाहित होने वाली गंगा को ही देवों का स्थान देकर पाखण्ड का बोलबाला था। धर्म के नाम पर समाज का निरन्तर पतन हो रहा था, समाज सुधार के नाम पर भ्रष्टाचार व अनाचार बढ़ता ही जा रहा था। पूजा व उपासना के नाम पर जड़-मूर्तिपूजा की उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही थी।

गंगा के घाट पर तथाकथित पंडे पुजारी झूठे संकल्प दिलाकर भोली-भाली जनता को ठग रहे थे। निरक्षर ब्राह्मण जन्मगत जातिवाद को मानकर अपनी पूजा-आरती करवाने में संलग्न थे। बाल-विवाह करवाकर अपने कर्त्तव्य की पूर्ति समझ रहे थे और असमय में वह कन्या यदि विधवा हो जाती तो उसे पुनर्विवाह का अधिकार नहीं था और आजीवन वह बाल विधवा वैधव्य जीवन व्यतीत करने के लिए विवश होती थी। अनुसूचित जाति तथा निम्न वर्गीय कन्या वा स्त्री उच्च वर्गीय कन्या के समान न तो श्रृंगार कर सकती थी और न ही आभूषण पहन सकती थी। निर्धन व्यक्ति अपनी कन्या धन के अभाव में धर्म के नाम पर पण्डों को संकल्प पढ़कर दान दे दिया करते थे। वेद के स्थान पर गप्पों से भरी अठारह पुराण तथा भागवत पुराण का पाठ किया जा रहा था और भोली जनता को बहकाकर पथभ्रष्ट करके संस्कृति और सभ्यता से पतित किया जा रहा था। ऐसी भयावह व विकट परिस्थितियों में हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों को नष्ट करने के लिए ऋषि ने वेदमन्त्रों तथा वैदिक सिद्धान्तों का आश्रय लेकर प्रचार-प्रसार का महाशंख निनाद किया और भागवत के उस वाक्य ने **'निगमकल्पतरोर्गलितं फलम्'** अर्थात् वेदरूपी कल्पतरु का फल गल गया है, सड़ गया है ऋषि को अपना मौन तोड़ने पर विवश कर दिया।

हरिद्वार की पौराणिक नगरी के गंगा तट पर भूपतवाला में वैदिक मोहन आश्रम में ऋषि ने 'पाखण्ड-खण्डन पताका' फहराकर खण्डन करने की दुन्दुभि बजा दी और उन पाखण्डियों तथा ढोंगियों को ललकारते हुए ऋषि ने कहा कि अरे भोले लोगो! परमात्मा की अमृत तथा सत्यवाणी केवल और केवल वेद है। उसी पवित्र वेदवाणी का प्रकाश सृष्टि के आदि में परमात्मा ने चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा आदि की अन्तरात्मा में किया और उद्घोष किया कि वेद ही प्राणिमात्र के कल्याण का साधन है और उपाय है। ऋषि ने उन सभी अन्धविश्वासों का खण्डन किया जो समाज सुधार के कार्यों में बाधक थे। ऋषि ने कन्याओं की शिक्षा का प्रबल पक्ष लेते हुए समर्थन किया और कन्या पाठशालाएं तथा गुरुकुल शिक्षा पद्धति पुन: आरम्भ की। ऋषि ने जातिवाद का खण्डन करते हुए कहा कि जाति केवल एक है और वह है मनुष्यजाति, पशुजाति, पक्षी जाति आदि भेद ही मान्य हैं व ग्राह्य हैं अन्य नहीं। ऋषि ने मृतक श्राद्ध का प्रबल खण्डन करते हुए तात्कालीन पौराणिक जगत् के संस्कृत के धुरन्धर विद्वानों को ललकारा और सिद्ध किया कि मृतक श्राद्ध वेदविरुद्ध तथा सिद्धान्तहीन है अत: केवल जीवित माता-पिता की सेवा, सम्मान व सत्कार ही सच्चा श्राद्ध है और उन्हें भोजन आदि पदार्थों से तृप्त करना ही उनका वास्तविक तर्पण है। महर्षि ने वेद का भाष्य कर तात्कालीन अनार्ष भाष्यकारों में खलबली मचा दी तथा हिन्दू समाज की प्रसुप्त चेतना को पुनर्जागरूक किया।

धर्मजगत् में मची क्रान्ति,
दयानन्द के आने से।
सुधारकों में हुई शान्ति,
वैदिक नाद बजाने से॥

पराधीन भारत में ऋषि दयानन्द ने न केवल धार्मिक व सांस्कृतिक क्रान्ति तथा परिवर्तन किया अपितु साहित्यिक तथा राष्ट्रीय आन्दोलन करके भी ऋषि ने सर्वतोमुखी विकास को आरम्भ किया। अंग्रेजी साम्राज्य में स्पष्टवादिता का उत्तम व उच्चतम गुण क्रान्तिकारियों को महर्षि दयानन्द से ही मिला। चाहे सरदार भगतसिंह हों अथवा सुभाषचन्द्र बोस या चन्द्रशेखर आजाद हों अथवा रामप्रसाद बिस्मिल। इन सभी राष्ट्रभक्तों को राष्ट्रभक्ति का पाठ पढ़ाने वाले प्रथम सूत्रधार आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ही थे।

दुन्दुभि ऋषि की बजने से,
वेदों का अनुपम मान हुआ।
वैदिक चिन्तन के सजने से,
ऋषियों का अतिसम्मान हुआ॥

धरती पर महापुरुष अनेक हुए परन्तु महर्षि दयानन्द अद्भुत रूप में पृथक् दृष्टिगोचर हो रहे हैं। देशभक्त बहुत हुए परन्तु ऋषि अलग दिखाई देते हैं। क्षमाशील महापुरुष अनेक हुए परन्तु विषपान कराने वाले को भी मुद्रा दान देकर अभयदान देने वाले महर्षि दयानन्द के अतिरिक्त कोई नहीं है। समाज सुधारक तो बहुत हुए परन्तु सर्वतोमुखी समाज सुधारक ऋषि महान् अकेले हैं। योगी अनेक हुए परन्तु परमात्मा से योग लगाकर आत्मिक शक्ति प्राप्त करने वाले महर्षि दयानन्द अपने आप में अद्भुत हैं।

अन्त में बस इतना ही कहूँगा कि ऋषि का जन्मोत्सव तथा बोधरात्रि हमारे लिए उत्तरोत्तर प्रेरक बने।

बोध निशा की आई जग में,
टंकारा की पुण्य धरा में।
ज्ञान दिया बालक शंकर को,
बुद्धि सात्त्विक ऋतम्भरा में॥

संपर्क-संस्कृत धर्माचार्य, आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, पानीपत

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।